

अर्थात् अव्य. (तत्.) यानी, तात्पर्य या अर्थ यह है कि, दूसरे शब्दों में।

अर्थादेश पुं. (तत्.) 1. भाषा. अर्थपरिवर्तन के कारण समय के साथ ही किसी शब्द के आर्थी क्षेत्र का पूर्णतः बदला जाना तु. अर्थ-विस्तार, अर्थसंकोच।

अर्थाधिकारी पुं. (तत्.) कोषाधिकारी, खजांची, कोषपाल।

अर्थानुरणन पुं. (तत्.) 1. काव्य. ध्वनि के माध्यम से शब्द चित्र प्रस्तुत करना 2. भाषा. अनुरणनात्मक शब्दों से उत्पन्न चित्रात्मक अनुभूति जैसे- छनछनाना, भन्नाहट।

अर्थानुवाद पुं. (तत्.) (केवल) अर्थ के अनुसार किया गया अनुवाद जिसमें भावार्थ या व्यंग्यार्थ निहित हो।

अर्थानुसंधान पुं. (तत्.) काव्य में शब्दार्थ को खोजने या समझने का प्रयत्न।

अर्थान्वयन पुं. (तत्.) किसी पाठ, कथन कार्य आदि से व्यक्त भाव को समझना या अर्थ लगाना

अर्थान्वित वि. (तत्.) 1. अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण 2. धनवान, धनी।

अर्थान्वेषक वि. (तत्.) काव्य या शब्द के अर्थ को खोजने वाला।

अर्थान्वेषण पुं. (तत्.) काव्य अर्थ खोजना।

अर्थान्वेषी वि. (तत्.) दे. अर्थान्वेषक।

अर्थापकर्ष पुं. (तत्.) अर्थ का हास, भाषा के ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में अर्थ-परिवर्तन की वह दिशा जिसमें किसी शब्द के मूल अर्थ में गुणात्मक दृष्टि से मूल्य का हास हो जाता है उदा. 'पुंगव' श्रेष्ठ व्यक्ति से 'पोंगा' (मूर्ख) बिना. अर्थोत्कर्ष।

अर्थापत्ति स्त्री. (तत्.) दर्श. (न्यायदर्शन के आठ प्रमाणों में से एक), एक बात कहने से दूसरी बात का ज्ञान हो जाना जैसे- 'बादल छाए हैं, वर्षा होगी' से यह सिद्ध हुआ कि बिना बादलों के वर्षा नहीं होती।

अर्थापदेश पुं. (तत्.) दे. अर्थादेश।

अर्थापन पुं. (तत्.) 1. शब्दों के अर्थ बताने या उनकी व्याख्या करने की क्रिया या भाव, अर्थ-निर्णय, अर्थ-व्याख्या।

अर्थाभाव पुं. (तत्.) धन का अभाव, अर्थ की कमी।

अर्थार्थी वि. (तत्.) 1. धन-प्राप्ति का इच्छुक 2. लक्ष्य-प्राप्ति का इच्छुक।

अर्थालंकार पुं. (तत्.) वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार हो न कि अनुप्रास आदि शब्दालंकारों का।

अर्थावधारण पुं. (तत्.) अर्थ का निर्धारण करना।

अर्थिक वि. (तत्.) 1. धन का इच्छुक 2. मन में कोई इच्छा रखने वाला पुं. भिक्षुक।

अर्थिम पुं. (तत्.) अर्थ. शब्द के मूल अर्थ तत्त्व को व्यक्त करने वाली इकाई जैसे- बहुवचनत्व, प्रेरणार्थकता आदि की वाहक इकाई।

अर्थी वि. (तत्.) 1. इच्छा रखनेवाला, चाहनेवाला 2. प्रार्थी 3. धनी 4. अरथी, शव को अंतिम संस्कार हेतु श्मशान ले जाने की सीढ़ी, टिकठी पुं. 1. याचक, माँगनेवाला 2. भिक्षुक 3. वादी।

अर्थोत्कर्ष पुं. (तत्.) अर्थ परिवर्तन की वह दशा जिसमें शब्द के मूल अर्थ में गुणात्मक मूल्य-वृद्धि हो जाती है, उदा. कुटीर का अर्थ है घासफूस की झोंपड़ी। अब महलनुमा भवनों के नाम भी 'कुटीर' शब्द सहित कहे जाते हैं।

अर्थोत्पत्ति पुं. (तत्.) 1. धन की उत्पत्ति 2. धन का उपार्जन।

अर्थोपक्षेपक पुं. (तत्.) नाटक की कथावस्तु की क्रमिक प्रगति के सूचक विष्कंभक आदि।

अर्थोपाय पुं. (तत्.) 1. किसी कार्य को संपन्न करने के लिए संसाधनों और उपायों की व्यवस्था 2. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा केंद्र एवं राज्य सरकारों को दी गई अग्रिम धनराशि जो